Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2025 = 8.486
https://www.srjis.com/issues_data/251
Peer Reviewed & Refereed Journal, MAR-APRIL 2025, Vol- 13/88

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचार एवं सतत् विकास लक्ष्य (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) के संदर्भ में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन

सीमा आर्य

शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, बिड़ला परिसर, हे. न. ब. वि. वि. श्रीनगर गढ़वाल

प्रो. सीमा धवन

प्रोफेसर शिक्षा विभाग, बिड़ला परिसर, हे. न. ब. वि. वि. श्रीनगर गढ़वाल

Paper Received On: 20 MAR 2025

Peer Reviewed On: 24 APRIL 2025

Published On: 01 MAY 2025

Abstract

शिक्षा मानव जीवन की एक मुख्य आधारशिला है, जो देश की उन्नति व विकास में अहम भूमिका अदा करती है| गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही व्यक्ति में उन शक्तियों का विकास करती है, जिसके द्वारा वह सही निर्णय लेने एवं अपने वातावरण की परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को व्यवस्थित करता है| ज्ञान के प्रतीक डॉ भीम राव अम्बेडकर अग्रणीय विचारकों एवं शिक्षाविदों में से एक थे| उनका शैक्षिक दर्शन तार्किक और मानवतावादी दृष्टिकोण पर आधारित था, जिसमें मानवीय गरिमा एवं स्वाभिमान का स्थान सर्वोपरि दृष्टिगत होता है| उन्होंने शिक्षा को सामाजिक न्याय और समाज में वांछित परिवर्तन लाने के लिए सबसे शक्तिशाली साधन माना | सतत् विकास लक्ष्य वे प्रतिमान हैं, जिसमें सामाजिक, आर्थिक व शैक्षाणिक, समस्त मानवीय पहलूओं से सम्बन्धित न्याय समाहित हैं| सतत विकास लक्ष्यों में गुणवत्ता शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है एवं सतत् विकास के अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने का केंद्र है| अतः प्रस्तुत शोध कार्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों एवं सतत् विकास के लक्ष्य 4 के सन्दर्भ में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है एवं यह जानने का प्रयास किया गया है कि छात्र डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों एवं सतत् विकास के लक्ष्यों के मध्य सम्बन्ध को किस प्रकार समझते हैं| प्रस्तुत शोध कार्य में गुणात्मक विधि द्वारा स्वनिर्मित उपकरण के प्रयोग से स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को जानने का प्रयास किया गया है|

मुख्य शब्द *– डॉ. भीम राव अम्बेडकर, शैक्षिक विचार, सामाजिक न्याय, मानवतावादी दृष्टिकोण, सतत् विकास लक्ष्य, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, मानवीय मूल्य|*

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का वह महत्वपूर्ण कारक है जो संपूर्ण समाज को आगे बढ़ाने एवं सम्पूर्ण मानव जाति के विकास के पैमाने को निर्धारित करने का आधार प्रदान करती है | डॉ. भीम राव अम्बेडकर जिन्हें बाबा साहब के नाम से भी संबोधित किया जाता है उनका जन्म 14 अप्रैल 1891 में महू में हुआ था| वह उच्चकोटि के शिक्षाविद, चिंतनशील और अग्रणीय वैश्विक विचारक थे| उन्होंने न केवल कानून का अध्ययन किया बल्कि अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र,

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

राजनीतिशास्त्र, इतिहास, धर्म, मानव विज्ञान, और अन्य विषयों का भी गहन अध्ययन किया| उनका मानना था कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से ही समग्र समाज को पिछड़ेपन असमानता, और अन्याय से मुक्ति मिल सकती है| "शिक्षा वह है जो व्यक्ति को साहसी बनाती है, उसे एकता का पाठ पढ़ाती है, अपने अधिकारों के बारे में जागृत करती है और उसे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है"(डॉ. अम्बेडकर)| शिक्षा के माध्यम से ही भारतीय जनमानस की रूढ़िवादी मानसिकता को प्रगतिशील विचारों में परिवर्तित किया जा सकता है| उन्होंने भारत में आधुनिकता की नींव रखी| साथ ही वे जॉन डीवी के आधुनिक व्यवहारिक दर्शन और बुद्ध की समानता की शिक्षाओं से व कबीर के मानव मूल्यों की शिक्षा से अधिक प्रभावित थे| ज्योतिबा फुले के विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने शिक्षा को सामाजिक क्रान्ति का वाहक माना"(कीर, 2019)| वे गुणवत्तायुक्त शिक्षा को भारतीय समाज में उल्लेखनीय परिवर्तन का माध्यम मानते थे, जिसके द्वारा जीवन के सभी क्षेत्रों में श्रेणीबद्ध असमानता को समानता बदला जा सकता है| डॉ. भीम राव अम्बेडकर के लिए शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करना ही नहीं था बल्कि वे शिक्षा को व्यक्ति में आलोचनात्मक एवं तार्किकता का बीजारोपण करने का माध्यम समझते थे| उनके विचार थे कि बुद्धि का विकास मानव अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए (डॉ अम्बेडकर)| उन्होंने शिक्षा को केवल मानव के व्यक्तित्व के विकास के रूप में या आजीविका के स्रोत के रूप में नहीं देखा अपितु उन्होंने शिक्षा को समाज में वांछित परिवर्तन लाने के लिए सबसे शक्तिशाली साधन माना| उन्होंने अपने लेखों, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षा और उसके उद्देश्यों के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षा मानव का बौद्धिक, चारित्रिक एवं, नैतिक विकास कर व्यक्तित्व के निर्माण में अमूल्य योगदान प्रदान करती है| वैश्विक स्तर पर 2015 संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सतत् विकास लक्ष्यों को 2030 तक प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है| सतत् विकास के 17 लक्ष्य है, जिसमें चौथा लक्ष्य है, "गुणवत्तापूर्ण शिक्षा" अर्थात सभी के लिए "समावेशी, न्यायसंगत और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना है", सतत् विकास के संप्रत्यय में शिक्षा को "सतत् विकास के लिए शिक्षा" के रूप में रेखांकित किया गया है जो छात्र छात्राओं में ज्ञान, कौशल, मूल्य विकसित करने की ऐसी सतत् प्रक्रिया है जो शिक्षा के माध्यम से मानव जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है| सतत् विकास लक्ष्य 4 का उद्देश्य शिक्षा को आधार बनाकर समावेशी एवं न्यायसंगत सतत् समाज का निर्माण करना है ताकि सभी शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हो सकें, सतत् विकास लक्ष्य 4 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अन्तर्गत सात लक्ष्य है और उसे प्राप्त करने के तीन साधनों का उल्लेख है| वर्तमान में सतत् विकास लक्ष्यों द्वारा सामाजिक, आर्थिक व पर्यावरणीय शैक्षिक समानता एवं संसाधनों के समान वितरण तथा मानवीय एवं सामाजिक समरसता पर बल दिया गया है, जिसे अम्बेडकर द्वारा उनके समय काल में पूर्व में ही प्रदर्शित किया गया है| उन्होंने शिक्षा को अपने जीवन में विशेष महत्व दिया| उनके विचार में उचित शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जिसके माध्यम से ही अवसरों के स्वर्णिम संभावनाओं के द्वार खुलते हैं एवं उन्नति और समृद्धि के मार्ग प्रशस्त होते हैं| उनका शिक्षा दर्शन मानवता पर आधारित है भावी पीढ़ियाँ डॉ. अम्बेडकर के चिंतन के अनछुए पहलू से परिचित

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हो सके और मानवतावादी मूल्यों को अपने जीवन में उतार कर मानवीय गरिमा एवम् स्वाभिमान को अपने जीवन में सर्वोपरि स्थान प्रदान करें है| डॉ. आंबेडकर के शब्दों में शिक्षा द्वारा ही मानव आपस में एवं समाज में स्वतंत्रता और समानता बंधुत्व के मूल्यों को विकसित कर सकता है जो शिक्षा द्वारा संभव है वह शिक्षा को समाजिक परिवर्तन का माध्यम मानते थे (तिरदिया और कटारिया 2022)| सतत् विकास "भविष्य के लिए एक शिक्षा" के रूप में मार्ग प्रशस्त करता है, और शिक्षण को प्रोत्साहित करता है (कोपनिना हेलेन 2020)| स्नातक स्तर के विद्यार्थी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भावी जीवन में सफलता के लिए महत्वपूर्ण है, जो विद्यार्थी को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाती है| स्नातक स्तर के विद्यार्थी के लिए यह वह स्तर है, जिसमें वे अपने निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक कौशलों के विकास का निर्णय लेते हैं, जो भविष्य में उच्च शिक्षा के माध्यम से उनके लिए जीविकोपार्जन का मार्ग प्रशस्त कराती है एवं जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए उन्हें सक्षम बनाएगी|

शोध का उद्देश्य—

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सतत् विकास के लक्ष्य 4, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों के प्रति स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना है|

शोध विधि-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया, जिसमें जनसंख्या के रूप में हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया, एवं न्यादर्श हेतु कला वर्ग के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन उद्देश्य पूर्ण विधि द्वारा किया गया एवं आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया, जिसमें गुणात्मक विधि द्वारा अर्द्धसंचरित साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से डॉ. भीम राव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों एवं सतत् विकास के लक्ष्य 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) से सम्बंधित प्रश्नों का निर्माण किया गया, एवं प्राप्त उत्तरों का विषयगत विश्लेषण (Thematic Analysis)किया गया है| विषयगत विश्लेषण के आधार पर प्राप्त परिणामों के आधार पर वर्तमान परिपेक्ष्य में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का डॉ. भीम राव अम्बेडकर के विचारों एवं सतत् विकास लक्ष्य 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) के प्रति दृष्टिकोण को जानने का प्रयास किया गया है|

परिणाम-

तालिका संख्या 1- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा डॉ. अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों के प्रति दृष्टिकोण

प्रारम्भिक कथन विषय उपविषय

प्रारम्भिक कथन	विषय	उप विषय
सतत् विकास लक्ष्य 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा)	समान अवसर (Equal Opportunity)	➢ निःशुल्क शिक्षा एवं अनिवार्य शिक्षा
	लैंगिक असमानता कम करना	➢ शिक्षा में सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

		➢ शिक्षा द्वारा सतत् और समावेशी समाज का निर्माण
	गुणवत्तापूर्ण तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा	➢ आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ाना
		➢ कौशलों का विकास
		➢ रोजगार का विकास
	शिक्षा का सार्वभौमिकरण	➢ सभी के लिए शिक्षा

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाओं में उन्होंने डॉ. भीम राव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों को समान शिक्षा के समर्थक के रूप में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है एवं वंचित वर्गों एवं महिला शिक्षा के समर्थक के रूप में अपनी राय दी है| वे डॉ. अम्बेडकर को अवसरों की समानता, निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के समर्थक के रूप में समझते है, जिन्होंने वंचित और कमजोर वर्गों के लिए मुफ्त शिक्षा एवं आरक्षण का प्रावधान किया| तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा के अन्तर्गत विद्यार्थियों ने कौशलों के विकास, जीविकोपार्जन के साधन एवं मानवीय जीवन में सुधार के रूप में प्रतिक्रिया दी है|

तालिका संख्या 2- स्नातक स्तर विद्यार्थियों के द्वारा सतत् विकास लक्ष्य 4 के प्रति दृष्टिकोण

प्रारम्भिक कथन	विषय	उप विषय
सतत् विकास लक्ष्य 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा)	समान अवसर (Equal Opportunity)	➢ निःशुल्क शिक्षा एवं अनिवार्य शिक्षा
	लैंगिक असमानता कम करना	➢ शिक्षा में सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना
		➢ शिक्षा द्वारा सतत् और समावेशी समाज का निर्माण
	गुणवत्तापूर्ण तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा	➢ आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ाना
		➢ कौशलों का विकास
		➢ रोजगार का विकास
	शिक्षा का सार्वभौमिकरण	➢ सभी के लिए शिक्षा

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा सतत् विकास के लक्ष्य 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) के सम्बन्ध में दी गयी प्रतिक्रियाओं में, समान अवसर के अन्तर्गत उन्होंने निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा पर अपनी राय दी है| लैंगिक असमानता कम करना, जिसके अन्तर्गत शिक्षा में सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना, शिक्षा द्वारा सतत् और समावेशी समाज के निर्माण को प्राथमिकता दी है| गुणवत्तापूर्ण तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा के अन्तर्गत, शिक्षा को आजीवन सीखने के अवसरों के रूप में बढ़ावा देना, कौशलों के विकास एवं रोजगार के अवसरों के क्षेत्र में अपनी प्रतिक्रिया दी है| शिक्षा के सार्वभौमिकरण के अन्तर्गत सभी के लिए सामान शिक्षा के रूप में अपनी राय दी है|

तालिका संख्या 3- स्नातक स्तर विद्यार्थियों के द्वारा सतत् विकास लक्ष्य 4 एवं डॉ. अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों के सम्बन्ध में दृष्टिकोण

	डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचार	सतत् विकास लक्ष्य 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा)
1	निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के समर्थक	➢ **लक्ष्य 4:1**
2	समान शिक्षा के समर्थक	➢ **लक्ष्य 4:2**
3	तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा के पक्षधर	➢ **लक्ष्य 4:3**
4	लैंगिक असमानता कम करना	➢ **लक्ष्य 4:5**

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

डॉ. अम्बेडकर के शैक्षिक विचार और सतत् विकास लक्ष्य 4 के सन्दर्भ में स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किए गए विचारों में उद्देश्य 4 के अन्तर्गत निर्धारित लक्ष्यों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है| डॉ. अम्बेडकर निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के समर्थक थे, जो कि सतत् विकास के लक्ष्य 4:1 में परिलक्षित होते हैं| वे समान शिक्षा के समर्थक रहे जिन्हें स्नातक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा सतत् विकास के लक्ष्य 4:2 में प्रदर्शित किया है| तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा के पक्षधर के रूप में सतत् विकास के लक्ष्य 4:3 से सम्बन्धित किया है तथा लैंगिक असमानता कम करना इसे लक्ष्य 4:5 संकेतक के साथ जोड़ा है |

परिचर्चा

सतत् विकास के लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से तात्पर्य है कि सभी के लिए "समावेशी, न्यायसंगत और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना है"| इस लक्ष्य के शीर्षक में ही डॉ. अम्बेडकर के विचार परिलक्षित हो रहे हैं| भारतीय समाज में समावेशन, न्याय, निष्पक्षता, समानता एवं सामाजिक न्याय के प्रणेता डॉ. भीमराव अम्बेडकर को माना जाता है| जब डॉ. अम्बेडकर को संविधान मसौदा समिति का अध्यक्ष बनाया गया तो उन्होंने संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य करने का प्रावधान रखा एवं शिक्षा पर बजटीय आवंटन बढ़ाने एवं व्यय की मांग की, जिससे की सार्वभौमिक रूप से सभी को शिक्षा सुलभ कराई जा सके| उन्होंने माध्यमिक और उच्च शिक्षा के द्वार सभी के लिए खोले एवं बिना किसी भेदभाव के समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षा की पहुँच को सुनिश्चित किया ताकि सम्पूर्ण समाज विकास एवं उच्च मानवीय मूल्यों की मुख्य धारा से जुड़ सके| उन्होंने नागरिकों की शिक्षा का उत्तरदायित्व एवं संवैधानिक प्रावधान सरकार को दिया ताकि कोई भी व्यक्ति गुणवत्तायुक्त शिक्षा से वंचित न रहे और सभी को सुलभ और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके| स्नातक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं में यह भी व्यक्त किया गया है कि डॉ. अम्बेडकर निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के समर्थक थे, उनका मानना था कि शिक्षा सभी का जन्मसिद्ध अधिकार है एवं यह सभी को बिना भेदभाव के मिलनी चाहिए, जिसके लिए उन्होंने कमजोर और गरीब लोगों के लिए शिक्षा में आरक्षण और छात्रवृत्ति का विशेष प्रावधान किया सतत् विकास के लक्ष्य 4.1 में उनके विचार परिलक्षित होते है| जिसका लक्ष्य है 2030 तक सभी बालक बालिकाएं निःशुल्क, समान गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा को पूर्ण करें| स्नातक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त प्रतिक्रियाओं में उन्होंने डॉ. भीम राव अम्बेडकर के शैक्षिक कार्यों को समान शिक्षा के समर्थक के रूप में व्यक्त किया है| उन्होंने वंचित और कमजोर वर्गों एवं महिला शिक्षा के लिए जितने कार्य डॉ. अम्बेडकर ने किए शायद ही किसी अन्य विचारक ने किए होंगे| उनका मानना था कि कमजोर और गरीब लोगों के पिछड़ेपन का कारण अशिक्षा है| शिक्षा ही व्यक्ति को शोषण, गुलामी एवं अज्ञानता से लड़ने की शक्ति प्रदान करती है| अतः उन्होंने वंचित वर्ग को शिक्षा के प्रति जागृत करने के लिए "शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो" का नारा दिया| उन्होंने शिक्षा को अपने जीवन में विशेष महत्व दिया तथा श्रेष्ठ शिक्षा उसे माना जो समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व का पाठ पढ़ाती हो| साथ ही उन्होंने इस बात का भी समर्थन किया कि ऐसी स्वतंत्रता का समाज कोई उपयोग नहीं है जहाँ क्रमिक असमानता ही समाज

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

में शताब्दियों से चलती आ रही हो तथा जिसमें वंचित और कमजोर वर्गों को शिक्षा से वंचित रखा गया हो| महिलाओं को मुख्य धारा में लाने के लिए और समाज में उन्हें सम्मानजनक स्थिति प्रदान करने के लिए आरक्षण का प्रावधान रखा| जिससे समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार हो सके और उन्हें शिक्षा, समाज, व्यवसाय, एवं राजनीति सभी क्षेत्रों में समान अवसर प्राप्त हो सके| संविधान समिति के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने महिलाओं की मुक्ति और उनकी आर्थिक स्वतंत्रता के लिए कई संवैधानिक प्रावधान किए जो की प्रशंसनीय है| वर्तमान समय में राष्ट्र की प्रगति में भी महिलाओं की भूमिका उल्लेखनीय है| डॉ अम्बेडकर का कहना था कि "मैं किसी भी समुदाय की प्रगति को महिलाओं द्वारा प्राप्त की गयी प्रगति के स्तर से मापता हूँ"| यदि महिलाएं शिक्षित होंगी तो वह अपनी संतानों को भी शिक्षित करेगी और उसके माध्यम से न केवल एक परिवार बल्कि पूरा समाज समृद्ध होगा"| डॉ. भीमराव अम्बेडकर को समाज में असमानता एवं भेदभाव के जो अनुभव प्राप्त हुए थे उनका संज्ञान लेते हुए उन्होंने वंचित समुदाय और महिलाओं को मुख्य धारा में लाने के लिए और समाज में उन्हें सम्मानजनक स्थिति प्रदान करने के लिए आरक्षण का प्रावधान रखा | जिससे समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार हो सके और उन्हें शिक्षा, समाज, व्यवसाय, एवं राजनीति सभी क्षेत्रों में समान अवसर प्राप्त हो सके | "भारत में जब फेमिनिज्म (नारीवाद) का कोई अस्तित्व ही नहीं था, उस समय बाबा साहब ने नारी सशक्तिकरण के लिए ऐसे कार्य किए जिससे आज भारतीय महिलाएं अंतरिक्ष तक पहुँच पाने में सफल हो सकी हैं (सुमित चौहान 2021)| छात्र छात्राओं द्वारा दी गयी प्रतिक्रियाओं में, सतत विकास 4 के अंतर्गत, शिक्षा में लैंगिक असमानता कम करना, सभी महिलाओं और पुरूषों के लिए बिना किसी भेदभाव के शिक्षा की सुलभता एवं सुनिश्चितता को प्राथमिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है, जो सतत् विकास के लक्ष्य 4 के अन्तर्गत 4.2 एवं 4.5 लक्ष्य को दर्शाता है| वैश्विक स्तर पर भारत में सबसे कम 3.7 मिलियन लड़कियाँ ही प्राथमिक विद्यालय नहीं जाती हैं जबकि उच्च शिक्षा में 24% लड़के और 17% लड़कियाँ ही नामांकित है (यूनेस्को 22 Feb 2023)| भारत में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा कई योजनाएं प्रस्तावित की गयी हैं, जिसके माध्यम से समाज में बालिकाओं की उचित भागीदारी सुनिश्चित हो सके| सतत् विकास लक्ष्य 4, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है| यह लक्ष्य समाज में व्याप्त शैक्षिक असमानताओं को कम करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं| तकनीकी और वैज्ञानिक प्रशिक्षण के बिना देश की कोई भी विकास योजना पूर्ण नहीं होगी (डॉ. भीम राव अम्बेडकर1944)| डॉ. अम्बेडकर तकनीकी शिक्षा के भी पक्षधर थे लेकिन तकनीकी शिक्षा उस समय उतनी उन्नत नहीं थी| अतः उन्होंने वंचित वर्ग के लोगों के उत्थान के लिए भी तकनीकी शिक्षा पर बल दिया ताकि उन्हें भी विज्ञान व प्रौद्योगिकी में रोजगार के अवसरों को प्राप्त कर सकें| तकनीकी शिक्षा अत्यधिक महंगी होने के कारण उन्होंने वंचित और कमजोर लोगों को शिक्षा में छात्रवृत्ति प्रदान करने की मांग की| इसके साथ-साथ उन्होंने विभिन्न संस्थानों में उनका प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए आरक्षण का भी प्रावधान रखा, जिससे उन्हें शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त हो सके| संविधान निर्माता के रूप में उन्होंने भारत के समस्त नागरिकों के लिए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक अधिकारों को सुनिश्चित किया एवं अनुच्छेद 14,15,16,17, जैसे संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से समाज में स्वतंत्रता, समानता

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तथा बन्धुत्व के सिद्धांतों को स्थापित करने का प्रयास किया| क्योंकि उनका मानना था कि तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा, विज्ञान व प्रौद्योगिकी के माध्यम से रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी एवं इन क्षेत्रों में आजीविका के अवसर प्राप्त होने से लोगों के जीवन स्तर में सकारात्मक वृद्धि होगी| भारत सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति 2020 में भी व्यवसायिक शिक्षा को रेखांकित किया गया है, जिसमें माध्यमिक स्तर से व्यवसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना सुनिश्चित किया गया है | सतत विकास गुणवत्तापूर्ण तकनीकी एवं व्यवसायिक शिक्षा 4.3 एवं 4.4 लक्ष्य को परिलक्षित करता है| यह लक्ष्य युवाओं के सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण आधार है जो कि युवक एवं युवतियों को व्यवसायिक कौशल और तकनीकी ज्ञान प्रदान करके नवाचारों के माध्यम से रोजगार के अवसर प्रदान करेगा एवं स्वरोजगार शुरू करने के लिए भी सक्षम बनाएगा| प्रस्तुत शोध में भी स्नातक स्तर के विद्यार्थियों ने सतत् विकास लक्ष्य के अन्तर्गत आजीवन सीखने की प्रक्रिया को महत्वपूर्ण लक्ष्य माना है जो व्यक्ति में ज्ञान कौशल और क्षमताओं का विकास करेगा एवं जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने में भी सक्षम बनाएगा जो कि उन्हें उनके समृद्ध भविष्य की ओर अग्रसर होने में सहायक हो सकेगा|

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं में उन्होंने सतत् विकास के लक्ष्य 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) के सम्बन्ध में 4:1, 4:2, 4:3, 4:5 उद्देश्यों पर डॉ. अम्बेडकर के विचारों को इन लक्ष्यों के सम्बन्ध में स्पष्ट तो किया है किन्तु उन्हें इस विषय में गहनता से जानकारी नहीं है| स्नातक स्तर के विद्यार्थी भविष्य के नागरिक है और उन्हें इन लक्ष्यों के विषय में अधिक से अधिक जानकारी होनी चाहिए क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से सतत् विकास के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा किया जा सकता है| शिक्षा के द्वारा ही समाज में व्याप्त गरीबी, भुखमरी, सामाजिक असमानता एवं लैंगिक असमानता को कम किया जा सकता है| लक्ष्य 4.6 सार्वभौमिक युवा साक्षरता लक्ष्य 4.7 सतत् विकास और वैश्विक नागरिकता के लिए शिक्षा 4A: समावेशी और सुरक्षित स्कूलों का निर्माण और उन्नयन 4बी: विकासशील देशों के लिए उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति का विस्तार करना व लक्ष्य 4सी विकासशील देशों में योग्य शिक्षकों की आपूर्ति करना, इन लक्ष्यों एवं सूचकांको के सन्दर्भ में छात्र-छात्राओं ने किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं दी है, जो कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने का मुख्य आधार है| साथ ही छात्र-छात्राओं द्वारा डॉ. अम्बेडकर के विचारों को इन लक्ष्यों के सम्बन्ध में स्पष्ट नहीं किया गया है जबकि सरकार द्वारा समय-समय पर कई योजनाएं प्रस्तावित की जाती है जो उच्च शिक्षा में आर्थिक रूप से कमजोर छात्र छात्राओं को बढ़ावा देने के लिए छात्रवृत्तियों की व्यवस्था का प्रावधान कर रही हैं तथा छात्र-छात्राओं को इन सभी विषय में जानकारी होनी आवश्यक है, जिससे कि विद्यार्थियों को आर्थिक लाभ के साथ उन्हें व्यवसायिक कौशलों में वृद्धि एवं रोजगार के अवसर सुनिश्चित किए जा सकें|

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को डॉ. भीमराव अम्बेडकर के बारे में भी गहनता से जानकारी नहीं है, जबकि डॉ. अम्बेडकर का विचार था कि प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेने वाला प्रत्येक बच्चा स्कूल तभी छोड़े जब तक वह साक्षर न हो जाये एवं वे ड्रापआउट विद्यार्थियों की समस्या का अध्ययन करने वाले प्रथम शिक्षाशास्त्री थे तथा वह प्राथमिक शिक्षा पर अधिक से अधिक खर्च करने के पक्षधर थे| उनका मानना था कि शिक्षा पर हम उतनी धनराशि तो खर्च करें जितनी हम उत्पादन शुल्क के रूप में लेते है| उच्च शिक्षा के विषय में उन्होंने कहा कि हमें शिक्षा में

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शोध को प्रोत्साहन देना चाहिए न कि परीक्षा प्रणाली को| वे विद्यालय को समाज का लघु रूप मानते थे और शिक्षा में समावेशन तथा सामूहिक शिक्षा पद्धति का समर्थन करते थे, जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेद भाव के समान शिक्षा प्रदान की जा सके| उन्होंने लोकतान्त्रिक सिद्धांतों पर आधारित वैज्ञानिक और तुलनात्मक प्रगतिशील पाठ्यक्रम की वकालत की जिससे छात्रों में आलोचनात्मक चेतना और तार्किक सोच का निर्माण हो सके| डॉ. अम्बेडकर ने शिक्षा के तीन सूत्रों चिंतन, मनन एवं, अध्ययन को अपनाया| वर्तमान में जहाँ एक ओर तेजी से शिक्षा का निजीकरण हो रहा है वहीँ दूसरी ओर समाज में आर्थिक रूप से कमजोर और वंचित लोग इन निजी संस्थाओं में प्रवेश से वंचित हो रहे हैं, क्योंकि इन निजी संस्थाओं में शिक्षा का व्यवसायीकरण अधिक है, इसीलिए डॉ. भीम राव अम्बेडकर शिक्षा में निजीकरण के पक्षधर नहीं थे| 1924 में उन्होंने बहिष्कृत हितकारणी सभा की स्थापना की, उन्होंने कई विद्यालय, महाविद्यालयों, छात्रावासों, पुस्तकालयों की स्थापना की, 1928 में उन्होंने डिप्रेस्ड क्लासेस एजुकेशनल सोसाइटी और 1945 में पीपुल्स एजुकेशन सोसाइटी जैसी संस्थाओं का गठन किया | डॉ. अम्बेडकर ने उच्च शिक्षा की पहुँच को सभी के लिए सुनिश्चित करने के लिए सिद्धार्थ और मिलिंद कॉलेज की स्थापना की| उनका विश्वास था कि सभी को समान अवसर एवं समान अधिकार सुनिश्चित होने से समाज का उत्थान होगा परन्तु छात्र छात्राओं को उनके इन विचारों के सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है| सतत् विकास के लक्ष्य 4A: समावेशी और सुरक्षित स्कूलों का निर्माण और उन्नयन 4बी: विकासशील देशों के लिए उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति का विस्तार करना इनमें डॉ. अम्बेडकर के विचार परिलक्षित होते हैं| जिसके विषय में छात्र-छात्राएँ अनभिज्ञ हैं|

निष्कर्ष

वर्तमान समय में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों को राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं वरन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रासंगिक हैं| डॉ. अम्बेडकर ने बौद्धिक चिंतन को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कारक माना, उन्होंने सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक क्षेत्रों में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है इसीलिए उन्हें वैश्विक स्तर पर ज्ञान के प्रतीक के रूप में जाना जाता है| वैश्विक स्तर पर प्रतिपादित सतत् विकास के लक्ष्य 4 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में भी उनके विचारों के अनुरूप हैं| स्नातक स्तर के विद्यार्थियों ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचार एवं सतत् विकास के लक्ष्य 4 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मध्य सामान्यतः रूप से अंतःसम्बंधित तो किया है किन्तु डॉ. अम्बेडकर द्वारा शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु उनके शैक्षिक विचार एवं सतत् विकास के लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अन्तर्गत निर्धारित लक्ष्यों एवं सूचकांको के सम्बन्ध के विषय में अस्पष्ट हैं| विद्यार्थियों का सतत् विकास लक्ष्यों एवं डॉ. अम्बेडकर के साथ सम्बन्ध को समझना आवश्यक है क्योंकि विद्यार्थी ही देश के भविष्य निर्माता हैं| वर्तमान समय में शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार सुधार किया जाए, इस पर सतत् विकास के लक्ष्य वैश्विक स्तर पर शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने और सभी को समान रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने पर केन्द्रित हैं| 19वीं सदी में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचार भी इन्हीं उद्देश्यों को प्राप्त करने पर केन्द्रित थे, जो उनके विचारों की दूरदर्शिता को प्रदर्शित करता है| डॉ. भीम राव अम्बेडकर सभी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं क्योंकि विषम परिस्थितियों से संघर्ष करके उन्होंने समाज में सभी को समान माना तथा सभी के उत्थान की बात कही| उनके विविध योगदान, शोध निष्कर्षों, विचारों और नीतियों को पाठ्यक्रम में शामिल करके हम विकसित भारत

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की परिकल्पना को पूर्ण कर सकते हैं और समतामूलक संपन्न राष्ट्र की स्थापना कर सकते हैं| केंद्र सरकार और राज्य सरकार को शैक्षिक प्रगति के लिए सार्थक एवं निरंतर संवैधानिक प्रावधान करते रहना चहिए| जिससे कि सभी को सस्ती और सुलभ शिक्षा प्राप्त हो सके, क्योंकि शिक्षा से ही समाज में स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों को विकसित किया जा सकता है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है|

सन्दर्भ सूची- .

Bragta, K. S. (2021). "Dr. Bhim Rao Ambedkar's Views on Social Justice": An Appraisal. Technium Social Sciences Journal. 25. 01- 15

बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर, संपूर्ण वाड़.मयं, (2003), खंड 3, पृष्ठ 55-59

बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर, संपूर्ण वाड़.मयं, (2003), खंड 19, पृष्ठ 23-29

Gadekar. S.S. (2019). "Dr. B.R. Ambedkar Educational Contributions in the Reconstruction of Modern Indian Society". International Journal of Humanities and Social Science Studies, 6(6), 95- 101

Jha, M.K. (2018). "Dr. B.R. Ambedkar's Contribution to Education". An Appraisal International Journal of Humanities and Social Science Research, 6(1) 7-14

कीर, डी. (2022). डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जीवन चरित, आस्मिता मोहिते पाप्युलर प्रकाशन प्र0लि0 महालक्ष्मी चेम्बर्स भुलाभाई देसाई रोड मुंबई 5(1), ISBN 978-81-7991-876-0

Kumar, P. (2021). "Social Justice: An Origin of Perspective and Ambedkar Notion of Social Justice". World Focus, 400, April, Special Issue on Dr. B.R Ambedkar and Social Justice.

Kumar, V. (2013). Ambedkar on Education and Emancipation, Journal of Indian Education 39(4) 98-109

Nithiya, p. (2012). Ambedkar's Vision on the Empowerment of Dalit Education. International Journal of Multidisciplinary Research,1(2). Pp 47-50, ISSN 2277-7881

Mahto, S.K.& Mahto, R. (2021), बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर के शिक्षा के तथ्यों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण, Journal of Advance and Scholarly Researches Allied Education 5(18) ISSN – 2230-7540

Mane, S. (2017). The Educational Ideas of Dr. B.R. Ambedkar, ISOR Journal of Humanities Social Science 22(3), Pp19-24

Raj, H. & G. Fatma (2023), Principles to Practice: Bhimrao Ramji Ambedkar's Philosophy and NEP 2020. International Journal of Current Science (IJCSPUB),13 (2), Pp 17-22

मीना, एम.(2017),अम्बेडकर हाशियाकृत समाज के शिक्षाशास्त्री. फॉरवर्ड प्रेस.

Manasa, G. M. (2018), Inspection of Dr. Ambedkar's towards Sustainable Education in Developing Society. Review Journal of Philosophy & Social Science (RJPSS), 43(1), Pp 247-253

Meka, S. J. (2022), The sustainable development goals and Ambedkar. Journal of positive school psychology. 6(6). Pp1026-1040

Sirswal, Desh Raj. (2011). Dr. Ambedkar ka Shiksha Darshan(Hindi). Himprastha. Year 57. pp.55-56.

Sutradhar, Narayan. (2023). Dr. B. R. Ambedkar's Struggle for Social Change in India. 04. 2499-2502.

Striving to Fulfil Ambedkar's Dream of Quality Education, Times of India, 10 December 2021

तिरदिया, एच. एंड कटारिया, ए.(2022) डॉ. भीमराव अम्बेडकर का शिक्षा दर्शन. अपनी माटी.(39), ISSN 2322-0724

Yadav, A. S. (2019), डॉ. भीम राव अम्बेडकर के सामाजिक और शैक्षिक विचारों का अध्ययन. Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, 16(4), 1709-1711. ISSN 2230-7540.

Internet link

https://link.springer.com/article/10.1007/s10639-022-11265-4

https://en.wikipedia.org/wiki/Sustainable_Development_Goal_4

Copyright © 2025, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies